महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा की पीएच.डी. (हिन्दी)
उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-सारांशिका

"मन्नू भंडारी के कथा साहित्य का मनोवैज्ञानिक अध्ययन"

शोध-छात्र
विनोद कुमार शुक्ल
नामांकन संख्या-FOA/1420 (05-10-2016)

शोध-निर्देशिका
प्रो. (डॉ.) शन्नो पांडेय
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, कला संकाय
महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा (गुजरात)

2025-26

शोध-प्रबंध अनुक्रमणिका

प्राक्कथन 4-13

प्रथम अध्याय : मन्नू भण्डारी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व 14-49

1.1 जन्म

1.2 शिक्षा

1.3 व्यवसाय

1.4 व्यक्तित्व

1.5 लेखन की प्रेरणा

1.6 कृतित्व

द्वितीय अध्याय : मनोविज्ञान और साहित्य 50-96

2.1 मनोविज्ञान की परिभाषा

2.2 मनोविज्ञान का क्षेत्र

2.3 मनोविज्ञान की विशेषताएँ

2.4 मनोविज्ञान की उपादेयता

2.5 साहित्य और मनोविज्ञान में अन्तःसंबंध

तृतीय अध्याय : मनोवैज्ञानिक हिन्दी कथा साहित्य की परम्परा 97-138

3.1. पूर्व प्रेमचंद युग

3.2. प्रेमचंद युग

3.3. प्रेमचंदोत्तर युग

चतुर्थ अध्याय : मन्नू भण्डारी की कहानियों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन 139-182

4.1. स्त्री मनोविज्ञान

4.2. बाल मनोविज्ञान

4.3. पुरुष मनोविज्ञान

4.4. समस्याओं का अवलोकन एवं निदान पक्ष

पंचम अध्याय : मन्नू भण्डारी के उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन 183-219

5.1. स्त्री मनोविज्ञान

5.2. बाल मनोविज्ञान

5.3. पुरुष मनोविज्ञान

5.4. समस्याओं का अवलोकन एवं निदान पक्ष

5.5. निष्कर्ष

उपसंहार 220-236

ग्रन्थानुक्रमाणिका 237-242

परिशिष्ट

शोध सारांशिका

'मन्नू भंडारी के कथा साहित्य का मनोवैज्ञानिक अध्ययन'

छठें दशक का 'नयी कहानी' आन्दोलन, जिसकी बागडोर राजेन्द्र यादव, कमलेश्वर एवं मोहन राकेश जैसे दिग्गज कथाकारों ने संभाली। उसी दौरान उषा प्रियंवदा पहली महिला कथाकार थीं जिन्होंने पाठकों एवं समीक्षकों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया। तत्पश्चात् अनेक महिला कथाकार आयीं किन्तु उनकी कहानियों की चर्चा एक ही विषय पर केन्द्रित रही। ऐसे समय में तमाम पुरुष एवं महिला कहानीकारों के बीच मन्नू भण्डारी की पहचान उनकी सहज रचनाधर्मिता के कारण पृथक बनी। वे आज भी महिला कथाकारों में सर्वाधिक चर्चित लेखिका के रूप में प्रतिष्ठित हैं। मन्नू जी की कहानियों में उनकी समकालीन महिला कहानीकारों की तरह ख्याली घोड़े नहीं अपितु उनमें अनुभव एवं समय की प्रामाणिकता है। मन्नू जी की कहानियों में वैयक्तिक चेतना सामाजिक संदर्भों से सम्बद्ध होने के कारण उन्हें विशिष्टता प्रदान करती है। उनके कथा-साहित्य में मनोवैज्ञानिक चेतना स्पष्ट दिखाई पड़ती है।

मन्नू जी ने पारिवारिक सम्बन्धों के विघटन, स्त्री-पुरुषों के सम्बन्धों के विखण्डन और समाज के विभिन्न वर्गों के बीच खाई का कारण मनोवैज्ञानिक भी माना है। मन्नू की अधिकांशत: कहानियाँ एवं उपन्यास संयुक्त परिवार एवं एकल परिवार पर केन्द्रित हैं। परिवार का सम्बन्ध मनोविज्ञान से भी जुड़ा है। मनोविज्ञान से तात्पर्य मानव के व्यवहार से है। मानव के सद्व्यवहार एवं दुर्व्यवहार से ही उसके पारिवारिक जीवन में समस्यायें उत्पन्न होती हैं। परिवार से समाज बनता है, समाज से देश बनता है। विघटित परिवार स्वस्थ जीवन मूल्यों की रक्षा करने में असमर्थ रहते हैं। मन्नू भण्डारी जी ने इस विघटन के अनेक मनोवैज्ञानिक कारणों पर अपनी पैनी दृष्टि डाली है। स्वयं मन्नू जी ने अपनी आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' में पुरुषों की पितृसत्तात्मक सोच कैसे एक आत्मनिर्भर लेखिका एवं शिक्षिका को त्रस्त करती है। इसे अपने पति प्रसिद्ध कथाकार राजेन्द्र यादव के दोहरे व्यक्तित्व की दास्तान के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

यूँ तो हर साहित्यकार के भीतर एक मनोविश्लेषक होता है। वह अपने पात्रों के मन को टटोलते हुए साहित्य की रचना करता है। मन्नू जी के कथा-साहित्य के कई पात्र मनोविज्ञान से जुड़े हुए पाये जाते हैं। जैसे- 'आपका बंटी' में बंटी के पात्र में हम बाल मनोविश्लेषण को देख सकते हैं। साथ में उनके अन्य उपन्यास 'एक इंच मुस्कान', 'स्वामी' में भी सामाजिक समस्या के साथ मनोविज्ञान से संबन्धित कई तरह की समस्यायें परिलक्षित होती हैं। 'महाभोज' एक राजनीतिक उपन्यास होने के बावजूद भी उसमें मनोविज्ञान की झलक देखने को मिलती है। मन्नू जी द्वारा लिखित कहानियाँ 'कील और

कसक', 'तीसरा आदमी', 'घुटन' एवं ऐसी कई कहानियाँ एक सर्वोत्तम मनोवैज्ञानिक कहानियों के रूप में हमारे समक्ष प्रस्तुत होती है। समाज में व्यक्ति अनेक परेशानियों से घिरा हुआ है, जिस कारण वह अनेक कुण्ठा एवं हीन भावना का शिकार हो रहा है। जिसका ज्वलन्त चित्रण हमें मन्नू भण्डारी के कथा-साहित्य में देखने को मिलता है।

मन्नू जी के कथा-साहित्य में समस्याओं का आधार मनोविज्ञान भी है। मनोविज्ञान मानव व्यवहार का विज्ञान होने के कारण व्यक्ति की क्रियाओं-व्यवहारों, आदतों तथा जीवन मूल्यों से भी सम्बद्ध है। कुछ मूल प्रवृत्तियाँ भी समस्याए उत्पन्न करने में सहायक होती हैं। भय, प्रतिस्पर्धा, मातृत्व तथा सेक्स जैसी मूल प्रवृत्तियाँ भी समस्याओं का कारण बन सकती हैं। मन्नू जी के कथा-साहित्य में संत्रास, पीड़ा, कुंठा, मानसिक आघात, स्त्री-पुरुष का अहं, हीनताग्रंथि, अन्तर्द्वन्द्व, विध्वंसन, व्यक्तित्व, पीढ़ियों का अन्तर, वय सुलभ आकांक्षा, परिवेशजन्य विकृति, विशेष मनोवृत्ति, जिजीविषा, द्वितीयक तनाव, प्रतिशोध, अपराधबोध तथा फालतू होने का अहसास आदि मनोवैज्ञानिक कारण, समस्याओं का आधार बनकर आये हैं। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मन्नू भण्डारी के कथा-साहित्य का अवलोकन किया जाये तो यह निष्कर्ष निकलता है कि जब सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक तथा पारिवारिक परिस्थितियां व्यक्ति के अनुकूल नहीं होती, उसके अचेतन मन में स्थित इच्छाएँ दमित होती हैं तो ऐसी परिस्थिति में व्यक्ति कुण्ठित होकर अपराध की ओर अग्रसर होता है। बाल अपराध एवं बाल अपराधियों की बढ़ती संख्या, स्त्री-उत्पीड़न के बढ़ते मामले, आत्महत्या एवं हत्या में बढ़ोत्तरी इसका प्रमाण है।

नैतिक मूल्यों का क्षरण, अतिआधुनिकता की ओर बढ़ते चरण तथा उपभोक्तावादी सोच ने हमारी विवेक बुद्धि का हरण कर लिया है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष तथा स्वार्थपरता ने हमारे हृदय में निहित प्रेम, दया, करुणा, परोपकार, सहानुभूति, ममता एवं त्याग का गला घोंट दिया है। जिसके फलस्वरूप तमाम क्षेत्रों में प्रगति करने पर भी अनेक सामाजिक एवं पारिवारिक समस्याओं से छुटकारा पाने में हम असमर्थ हैं। मनोरोगी समाज के निर्माण की ओर बढ़ रहे हमारे कदमों पर नियंत्रण तभी संभव है जब हम इस मुद्दे पर गंभीर होकर चिन्तन-मनन करें। अतः मन्नू भण्डारी के कथा-साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक दृष्टि से अध्ययन के पीछे यही अपेक्षित मन्तव्य है। मन्नू जी ने अपने कथा-साहित्य में पात्रों को मनोवैज्ञानिक तौर पर परखा है। उनके पात्र जीवन के अत्यन्त करीब हैं। फलस्वरूप जीवन में स्थित समस्या के कारण व्यक्ति के मन पर पड़े प्रभाव को मन्नू जी ने अपने कथा-साहित्य में अत्यन्त सफलतापूर्वक चित्रित किया है। इस प्रकार स्वातन्त्रयोत्तर युग में मनुष्य के जीवन में बदलते परिवेश के कारण अनेक बदलाव आये हैं। इतना ही नहीं, व्यक्ति के

जीवन मूल्य भी विघटित नज़र आते हैं। परिणामस्वरूप मानव जीवन अनेक समस्याओ से घिरा हुआ पाया जाता है। मनुष्य जीवन की गुत्थियों को सुलझाने में असमर्थ होकर मनोविकार का शिकार होने लगा है। लेखिका ने पाठकों के समक्ष मानव जीवन की विषम गतियों के कारण उत्पन्न कुण्ठा, हीन भावना को दर्शाया है। मन्नू जी ने मनोविश्लेषण के सिद्धान्तों के आधार पर बारीकी से पात्रों के मन का विश्लेषण किया है। मानव मन की गहराईयों को स्पर्श करते हुए सूक्ष्म एवम् जटिल मानसिक स्थिति को प्रस्तुत करने में सफल रहा है।

मन्नू भण्डारी जी की हिन्दी कथा-साहित्य के क्षेत्र में एक विशिष्ट पहचान है। उन्होंने समाज में व्याप्त अनेक विसंगतियों को उभारने के साथ-साथ नारी के अंतर्द्वंद्व, प्रेम के निर्णायक क्षणों में नारी की वेदना तथा मस्तिष्क को झकझोर देने वाली घुटन, टूटन, निराशा, संत्रास, तनाव को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है। मन्नू जी की संवेदनाओं का विश्व अत्यन्त व्यापक है। नारी होने के नाते उन्होंने न केवल नारी को ही अपने लेखन के केन्द्र में रखा है बल्कि समाज के हर क्षेत्र में रहने वाले व्यक्ति को स्वर दिया है। वस्तुतः मन्नू जी के कथा- साहित्य के दो आयाम हैं- प्रथम है मध्यवर्गीय आम आदमी और दूसरा है नारी। इन्हीं को आधार बनाकर उन्होंने अपनी लेखनी चलाई है। मन्नू जी ने अपने कथा-साहित्य में भारतीय मध्यवर्गीय व्यक्ति की समूची संवेदनाओं को अभिव्यक्त किया है। पिता की असामयिक मृत्यु किस कदर एक उभरते हुए कलाकार को खत्म कर देती है, उसके वर्तमान जीवन में स्वप्नों का रेत की दीवार की तरह ढह जाना लेखिका ने चित्रित किया है। मन्नू जी ने समाज के हर वर्ग से पात्र लिये हैं। अत्याधुनिक शहरों की मानसिक यंत्रणा के साथ दो पीढ़ियो की टकराहट में पिसती नयी पीढ़ी के तनाव को भी अभिव्यक्त किया है। मन्नू जी ने आम आदमी के तनाव, अकेलेपन, क्षणवाद, कुण्ठा, नैतिक मूल्यों के पतन के साथ ही उच्च-मध्यवर्गीय व्यक्ति के खोखलेपन को भी अपनी रचनाओं में उभारा है।

मन्नू जी ने परिवेशजन्य विकृतियों के कारण मनःस्थिति में आये बदलाव मनःस्नायु विकृतियाँ, मनोविकृतियाँ, जैसे- चिन्ता मनःस्नायु विकृतियाँ, मनोग्रस्तता, बाध्य विकृतियाँ, दुर्भीति, मनःश्रांति, आंगिक चेष्टायें, लैंगिक विपर्यास, परपीड़न, स्वपीड़न, स्पर्श आसक्ति एवं राजनीतिक विकृतियों के कारण उत्पन्न कुण्ठाओं, काम विकृतियाँ एवं आर्थिक विडम्बनाओं के कारण उत्पन्न हीन भावना पर अपनी पैनी दृष्टि डालते हुए अपने कथा-साहित्य में जीवन के हर पहलू का पर्दाफाश किया है। मनोविश्लेषण के सिद्धान्तों की परिसीमा में मन्नू जी ने व्यक्ति के जीवन के मानसिक रूप में उसके

स्थाई पक्ष को बहुत ही सहजता से चित्रित किया है। मन्नू जी ने अपने कथा-साहित्य में अचेतन, अवचेतन, अहम् लिविडो जैसे शुद्ध मनोवैज्ञानिक-सिद्धान्त जो फ्रायड द्वारा विश्लेषित हैं, उसे जीवन दृष्टि के शुद्ध रूप में स्वीकारा है। साथ ही आधुनिकता बोध, भय, त्रास, पीड़ा, मृत्युबोध आदि को मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में अपने चरित्रों के माध्यम से सफलतापूर्वक दर्शाने की कोशिश की है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् नारी को स्वतन्त्रता मिलने के कारण उसमें अहम का विकास होने लगा जिसका प्रभाव परिवार पर पड़ा। मन्नू जी ने अपने कथा-साहित्य में इस प्रकार की समस्याओं से उत्पन्न मानसिक तनाव को भी बखूबी चित्रित किया है। नारी-पुरुष के अहं के कारण पारिवारिक विघटन हो रहे हैं, जिस कारण मनुष्य हीन भावना एवं कुण्ठा का भी शिकार हो रहा है। इसका सर्वोत्कृष्ट उदाहरण मन्नू जी का उपन्यास 'आपका बंटी' में देखा जा सकता है। पारिवारिक विघटन के कारण एक बच्चे की बदलती मानसिक स्थिति को भी हम इस उपन्यास में देख सकते हैं। मन्नू जी के कथा-साहित्य में अधिकतर हम अहं, हीनता या श्रेष्ठता ग्रंथि, काम भावना आदि से सम्बन्धित विविध प्रकार के भावों को देख सकते हैं। परिवार का मुख्य आधार है दाम्पत्य सम्बन्ध। स्वातन्त्रयोत्तर समाज में उसकी नींव कमजोर पड़ने पर समस्यायें बढ़ने लगीं हैं। पति-पत्नी के बीच अहं भावना, यौन असंतुष्टि, अनिच्छित विवाह, संतान की कभी ऐसे कई कारण हैं, जिसके द्वारा दंपति घुट-घुटकर जीने को विवश हो जाता है। ऐसे स्वस्थ्य समाज के निर्माण के लिए दाम्पत्य जीवन अत्यंत महत्वपूर्ण है। लेखिका ने 'आपका बंटी', 'एक इंच मुस्कान' में इस समस्या से उत्पन्न अकेलेपन की भावना को दर्शाया है। इतना ही नहीं पति के जीवन में अत्यधिक व्यस्तता, पति द्वारा उपेक्षित, आत्मनिर्भर नारी, स्वातंत्र्य चाहने वाली विडम्बना को भी लेखिका ने अपने कथा- साहित्य में क्रमशः ऊंचाई, 'कील और कसक', 'बाहों का घेरा', 'तीसरा आदमी' आदि कहानियों एवं 'स्वामी' तथा 'आपका बंटी' आदि उपन्यासों में उद्घाटित किया है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध कुल पाँच अध्यायों में विभक्त है-

प्रथम अध्याय- मन्नू भण्डारी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व के अन्तर्गत जन्म, शिक्षा, व्यवसाय, व्यक्तित्व, लेखन की प्रेरणा एवं कृतित्व का अध्ययन एवं अनुशीलन किया गया है। वस्तुतः मन्नू भण्डारी जी एक सफल कलाकार और साहित्यकार थीं। यद्यपिं आज वे हमारे बीच नहीं हैं किन्तु उनका साहित्य उन्हें अमरत्व प्रदान करता है। जीवन संघर्ष का सामना करके मन्नू जी ने अपने उपवन में फूल की खुशबू बिखेरी है। उनकी कृतियों को बहुत लोकप्रियता प्राप्त हुई और हिन्दी साहित्य

जगत में उनका स्थान अत्यधिक चर्चित है। आधुनिक युग महिला उत्थान का युग माना जाता है। सदियों के संस्कारों और सामाजिक बाधाओं की बेड़ियाँ काटकर महिलाएँ हर क्षेत्र में न केवल प्रवेश कर गयी हैं बल्कि साहित्य, समाज, राजनीति और अन्य पदों को सुशोभित कर रही हैं। उनमें हिन्दी साहित्य क्षेत्र में श्रीमती मन्नू भण्डारी का नाम विशेष उल्लेखनीय है। मन्नू जी ने भारतीय नारी, समाज, देश आदि समस्याओं को यथार्थ रूप में चित्रित करके अनेक ज्वलन्त मानवीय प्रश्नों को उठाया है और सही दिशा में सोचने की बेचैनी पैदा की है। लेखिका के नाटक, कहानियाँ, बाल साहित्य, उपन्यास आदि प्रसिद्धि पथ पर जाने के सबूत हैं। वास्तव में हिन्दी साहित्य में उनका नाम एक ख्यातिलब्ध कहानीकार के रूप में ही गिना जाता है लेकिन उनके दो मौलिक उपन्यास 'आपका बंटी' और 'महाभोज' के कारण उन्हें प्रथम श्रेणी के उपन्यासकारों में गिना जाने लगा है।

मन्नू जी का साहित्य एक कुशल पथ-प्रदर्शक के समान समाज का पथ प्रदीप्त करता रहा है। उनका कथा-साहित्य निश्चित ही समाज में नारी के प्रति विचारधारा को बदला, उनके द्वारा लिखे गये लेख अत्यधिक प्रभावशाली है। वे सदैव समाज में चल रही घटनाओं का वर्णन अपने लेखों और कहानियों में करती थीं, इसलिए इनकी कहानियाँ हृदयस्पर्शी होती हैं। हिन्दी साहित्य में जब स्त्री के लेखन को लेकर नारीवाद और अस्मिता-विमर्श का बोल-बाला है। मन्नू जी की कहानियाँ बिना किसी अतिरिक्त शोर-शराबे, जलसे-जुलूस की सुलभ नारेबाजी और 'युद्ध' देहि' मुद्रा के शान्त और धीमें स्वर में प्रदर्शित करती है कि सहज रूप में व्यक्तित्व-सम्पन्न, मूल्य सजग और उत्तरदायी स्त्री दृष्टि क्या होती है? यह आवश्यक नहीं है कि कहानी का मुख्य पात्र कोई स्त्री ही हो। संयुक्त प्रणाली की परिपाटीबद्ध पारिवारिक जीवन में सुरक्षा, सफलता, प्रतिष्ठा, मर्यादा आदि के नाम पर व्यक्ति को क्या-क्या होम करना पड़ता है। अपनी सृजनात्मक प्रतिभा, स्वतन्त्रता, सहजता, निर्णय क्षमता, सार्थकता का अहसास, शायद जिजीविषा और जीवंतता तक।

मन्नू जी परिपाटी के विरोध में और तथाकथित विचलन परन्तु सृजनात्मक जीवन के खतरों के पक्ष में अपना मन्तव्य प्रकट करती है। सफलता की कसौठी उनके लिए भिन्न है। उनकी कहानियों के विषय में जो कहा जाता है कि ये सादगीपूर्ण है, लेखिका भी मानती हैं कि मनुष्य की संवेदना को जगाने की शक्ति तो मात्र रचनात्मक लेखन में होती है और आज उसकी बहुत ही आवश्यकता है। मन्नू जी हिन्दी साहित्य में बहुमुखी प्रतिभा की धनी रचनाकार हैं, इन्होंने काव्य, उपन्यास, कहानी, निबन्ध, आत्मकथा, लेख आदि लिख कर हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि किया है। मन्नू जी ने अपने साहित्य में

राष्ट्रपति, समाजवाद, मानवतावाद एवं लोकचेतना तथा स्त्री विमर्श को प्रमुख स्थान दिया है तथा नारी के गौरव के प्रति आस्था प्रकट करता है।

विश्व मानवता के समरस विकास, हित, मूल्य, प्रतिष्ठा तथा उन्नति करने का निरन्तर प्रयास किया है। मन्नू जी ने अपने जीवन में एक नारी की समस्त भूमिकाओं का निर्वहन किया तथा एक शिक्षिका के रूप में समाज और देश की सेवा की। साहित्य सेवा के साथ ही उन्होंने नारी-उत्थान के लिए किये जाने वाले कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। अनेक विपरीत परिस्थतियों के बावजूद उन्होंने अपने सिद्धान्त और व्यवहार में एकरूपता बनाये रखा। अपने सिद्धान्तों से कभी भी समझौता न करने वाली मन्नू जी के प्रति हिन्दी साहित्य सदैव अभारी रहेगा।

द्वितीय अध्याय 'मनोविज्ञान और साहित्य'

द्वितीय अध्याय 'मनोविज्ञान और साहित्य' के अन्तर्गत मनोविज्ञान की परिभाषा, मनोविज्ञान का क्षेत्र, मनोविज्ञान की विशेषताएँ, मनोविज्ञान की उपादेयता तथा साहित्य और मनोविज्ञान में अन्तः सम्बन्ध का अध्ययन एवं अनुशीलन किया गया है। वस्तुतः मनोविज्ञान की परिभाषाओं से यह स्पष्ट होता है कि मनोविज्ञान का क्षेत्र अत्यन्त विशाल एवं व्यापक है। बिल्कुल मनुष्य के मन की तरह। सभी मनोवैज्ञानिकों ने अपनी परिभाषाओं के माध्यम से अपने-अपने विचार प्रकट कर मनोविज्ञान के स्वरूप को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। मनोविज्ञान वर्तमान जीवन की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। 'आत्मा और मन' के अध्ययन से शुरू हुआ मनोविज्ञान आज व्यवहार मनोविज्ञान बन गया है। आधुनिक जीवन की जटिलताओं के कारण व्यक्ति आज अनेक स्तरों का संघर्ष कर रहा है। उसका यह संघर्ष बाह्य जीवन से अधिक आन्तरिक है, जिसे हम मानसिक संघर्ष भी कह सकते हैं।

मनोविज्ञान व्यवहार का वैज्ञानिक पद्धतियों के द्वारा अध्ययन करता है, इस कारणवश समस्त प्राणियों का निरीक्षण विश्लेषण किया जाता है। अर्थात् प्राणिमात्र के समस्त्र क्षेत्रों का समावेश मनोविज्ञान के अन्तर्गत होता है। इससे मनोविज्ञान का विषय क्षेत्र आज काफी विस्तृत होता दिखाई देता है। दिन-प्रतिदिन उसमें अनेक नये क्षेत्रों विषयों का समावेश हो रहा है। मानव जीवन के सामान्य क्षेत्र से लेकर असामान्य क्षमतावाले व्यक्तियों का अध्ययन इसके अन्तर्गत किया जाता है। उसी प्रकार बालकों के पालन-पोषण, उसकी शिक्षा-दीक्षा का वैज्ञानिक अध्ययन भी मनोविज्ञान के अन्तर्गत आज प्रमुख रूप से हो रहा है। उसी प्रकार अनेक मनोविकारों, उनके नैदानिक विधियों, उद्योगों, व्यवसायों के लिए उचित परामर्श एवं

मार्गदर्शन आदि क्षेत्रों का अध्ययन मनोविज्ञान के क्षेत्रो में किया जा रहा है। इन सभी क्षेत्रों का मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन करने के पीछे प्रमुख उद्देश्य यह है कि मनुष्य को मानसिक द्वन्द्वों से मुक्तता दिलाकर उनके जीवन व्यवहार को अधिक सफल एवं सहज बनाया जाये। इस उद्देश्य की पूर्ति में मनोवैज्ञानिक पूर्ण रूप से सफलता प्राप्त कर रहा है, ऐसा माना जा सकता है।

साहित्य कोई भी हो उसमें मनोविज्ञान का अंश कम या अधिक मात्रा में पाया जाता है। साहित्य और मनोविज्ञान का मूल अध्ययन विषय मानव मन है। इसी कारण साहित्य और मनोविज्ञान का सम्बन्ध अत्यन्त पुराना है। मनोविज्ञान जहाँ मानव-मन के रहस्यों को खोलता है वहीं साहित्य व्यक्ति के जीवन के संघर्षों, मानसिक संवेदनाओं, भाव-भावनाओं को सहज रूप से अभिव्यक्त करता है। मनोविज्ञान और साहित्य का अध्ययन विषय एक होने के कारण दोनों ही मनुष्य को समझने की कोशिश में लगे हुए हैं। मनोविज्ञान का सम्बन्ध वास्तविक जगत से होता है तो साहित्य इसी वास्तविक जगत में अनुभूत जीवन को कलात्मक रूप से व्यक्त करता है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार मनुष्य अपने ज्ञानेंद्रियों की सहायता से रोज नव-नवीन अनुभव प्राप्त करता है। इन्हीं प्राप्त अनुभवों का उद्घाटन साहित्य में किया आता है। साहित्य मूलतः किसी वाद से प्रभावित नहीं होता, साहित्यकार भले ही हो, साहित्य मानवीय मन की अभिव्यक्ति का साधन है। वहीं मनोविज्ञान मानव मन का अध्ययन करता है अर्थात् मनोविज्ञान और साहित्य का अध्ययन विषय मानव मन है, इसी कारण साहित्य और मनोविज्ञान का सम्बन्ध अत्यन्त घनिष्ठ है। साहित्य का वर्तमान युग मनोविज्ञान के युग के नाम से जा सकता है क्योंकि मानव मन की जटिलताओं को देखते हुए आधुनिक साहित्यिक कृतियों में मनोवैज्ञानिक पक्ष प्रबल हो गया है। इस प्रकार मनोविज्ञान आधुनिक युग की अनमोल देन है जो भारतीय दर्शन से विकसित हुए मन का विज्ञान के अर्थ में ग्रहण किया जाता है। उसके बाद मनोविज्ञान में आत्मा का अध्ययन भी किया जाने लगा लेकिन जैसे-जैसे मनोविज्ञान विकसित होता गया वैसे-वैसे मनोविज्ञान का अध्ययन विषय भी बदल गया। आज मनोविज्ञान में सम्पूर्ण मानव के व्यवहार का अध्ययन किया जा रहा है। मनोविज्ञान के विकास में भारतीय तथा पाश्चात्य मनोवैज्ञानिकों ने अपना योगदान दिया है। लेकिन अमेरिका, रूस, जर्मनी तथा ब्रिटेन आदि देशों के विद्वानों ने मनोविज्ञान को आधुनिक रूप देकर उसको आधिक विकसित किया। इन सबका परिणाम यह हुआ कि मनोविज्ञान के अनेक अध्ययन क्षेत्र बने, जिसमें मानव जीवन के समस्त कार्यकलापों का अध्ययन, विश्लेषण किया जाने लगा। मनोविज्ञान के इन क्षेत्रों में सामान्य विषय से लेकर, समाज मनोविज्ञान, बाल मनोविज्ञान, शिक्षा मनोविज्ञान आदि क्षेत्र जो मानव से सम्बन्धित है उनका अध्ययन

कर उस क्षेत्र में आने वाले मानसिक संघर्ष को दूर करने का प्रयत्न किया गया।

व्यक्ति के जन्म से लेकर उसके पालन-पोषण, शिक्षा-दीक्षा आदि सभी के बारे में उचित अध्ययन तथा मार्गदर्शन मनोविज्ञान में किया जा रहा है। व्यक्ति मनोविज्ञान का केन्द्रीय विषय होने के कारण व्यक्तित्व निर्माण में मनोविज्ञान सहायक तथा मार्गदर्शक की भूमिका निभा रहा है। व्यक्तित्व का अध्ययन प्राचीन काल से ही होता रहा है, इस दृष्टि से पाश्चात्य मनोवैज्ञानिक 'कार्ल युंग' ने व्यक्तित्व का उचित अध्ययन कर उसे भावनाओं के आधार पर अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी व्यक्तित्व के प्रकार तथा उसके भी चार-चार उपप्रकार किया है, उनके द्वारा व्यक्तित्व का विभाजन मनोवैज्ञानिक जगत् में अत्यन्त प्रचलित है। साहित्य मानवीय मन की अभिव्यक्ति का साधन और मनोविज्ञान का सम्बन्ध चोली-दामन की तरह अटूट है। साहित्य में मानवीय भावनाओं को कलात्मक ढंग से अभिव्यक्त किया जाता है, अर्थात् साहित्य और मनोविज्ञान दोनों मानव मन की बातें करते हैं। इस प्रकार साहित्य और मनोविज्ञान का सम्बन्ध अत्यन्त घनिष्ट है। आधुनिक युग में मनोविज्ञान की प्रगति के कारण इसे मनोवैज्ञानिक युग कहा जाता है। इसी मनोविज्ञान से प्रभावित होकर अनेक लेखक मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के आधार पर साहित्यिक कृतियों की रचना कर रहे हैं।

तृतीय अध्याय 'मनोवैज्ञानिक हिन्दी कथा - साहित्य की परम्परा'

तृतीय अध्याय 'मनोवैज्ञानिक हिन्दी कथा-साहित्य की परम्परा' के अन्तर्गत पूर्व प्रेमचंद युग, प्रेमचंद युग, प्रेमचन्दोत्तर युग का अध्ययन एवं अनुशीलन किया गया है। वस्तुतः हिन्दी कथा-साहित्य पर पाश्चात्य मनोवैज्ञानिकों का प्रभाव अत्यधिक रहा है। कथा-साहित्यकारों ने काम भावना, घुटन, निराशा आदि को जीवन का अंग समझकर रचनायें की हैं। वास्तव में जब तक व्यक्ति का अस्तित्व पृथ्वी पर रहेगा तब तक मनोविज्ञान और साहित्य एक-दूसरे से जुड़े रहेंगे। वर्तमान में वह नये-नये रूपों में साहित्य को प्रभावित कर रहा है। कथा-साहित्य के अन्तर्गत मनोविज्ञान पूर्व प्रेमचंद युग, प्रेमचंद युग तथा प्रेमचंदोत्तर युग में विद्यमान रहा है। वर्तमान कथा-साहित्य का दौर विमर्शों का दौर है, जिसमें नारी, दलित, आदिवासी, किन्नर, वृद्ध एवं पर्यावरण आदि का मनोवैज्ञानिक अध्ययन बहुतायत में देखने को मिलता है। पूर्व प्रेमचंद युगीन कथा-साहित्य में मनोवैज्ञानिक चित्र कम ही हुआ है। इसमें सामाजिक समस्याओं, समाज व्यवस्था, विसंगतियों एवं दुर्व्यवस्थाओं का वर्णन अधिक है। साथ ही इनका मूल उद्देश्य समाज सुधार एवं पाठकों का मनोरंजन ही था। इस युग के प्रायः सभी लेखक सनातन धर्म में अटूट आस्था रखने वाले थे उनके सांस्कृतिक मूल्यों तथा नैतिक दृष्टिकोण को

निश्चित करने वाला प्रमुख तत्व सनातनधर्मी दृष्टिकोण है। सामान्यतः सामाजिक जीवन के जो चित्र इन उपन्यासकारों ने दिखाये हैं, वे संकीर्ण, अनुदार और आज के प्रगतिशील युग में रूढ़िगत प्रतीत होते हैं। वस्तुतः इस युग का सामाजिक पक्ष अत्यन्त रूढ़िबद्ध परम्पराओ से आबद्ध दिखाई पड़ता है। प्रेमचंद युगीन कथा - साहित्य में मनोवैज्ञानिकता है किन्तु अधिक नहीं। इस युग में ऐतिहासिक, सामाजिक, व्यक्तिवादी आदि अनेक ढंग के उपन्यास लिखे गये किन्तु उनमें मनोवैज्ञानिकता न के समान ही है। यद्यपि प्रेमचंद और प्रसाद जी के उपन्यासों और कहानियों में मनोवैज्ञानिकता देखने को मिलती है। प्रेमचंद युग में ही अपने लेखन का आरम्भ करने वाले जैनेन्द्र जी के उपन्यासों 'परख' और 'सुनीता' में मनोवैज्ञानिकता का वास्तविक उत्कर्ष देखने को मिलता है। तत्पश्चात् इलाचन्द्र जोशी, सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय तथा डॉ० देवराज आदि ने इसे अपनाया और आगे बढ़ाया। प्रेमचन्दोत्तर युग में यथार्थ के विविध आयामो की अभिव्यक्ति हुई। इस युग में मनोवैज्ञानिक, समाजवादी, सामाजिक, ऐतिहासिक, आंचलिक आदि उपन्यास भी लिखे गए।

प्रेमचंद जी भी कथा के लिए मनोविज्ञान को अनिवार्य मानते हैं। उनके उपन्यासों और कहानियों में मनोविज्ञान से अपेक्षित सहायता ली गयी है किन्तु प्रेमचंद के कथा-साहित्य को मनोवैज्ञानिक तथा कथा-साहित्य के नाम से नहीं जाना जाता। आज मनोवैज्ञानिक कथा-साहित्य का अर्थ पूर्व से भिन्न एवं विशेष संदर्भों में गृहीत हैं। प्रेमचंदोत्तर युग में लिखे गये मनोवैज्ञानिक उपन्यास वास्तव में मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास हैं, जिनमें मस्तिष्क के चेतन, अचेतन और अवचेतन विभागो में से अवचेतन को विशेष महत्त्व प्रदान किया जाता है। अवचेतन ही हमारे समस्त कार्य व्यापारों और व्यक्तित्व का नियंता और निर्माता होता है। मूल रूप से मनुष्य वह नहीं हैं जो वह ऊपर-ऊपर सतह पर दिखाई पड़ता है बल्कि वह है जो उसके भीतर अनभिव्यक्त रूप से प्रच्छन्न है। अवचेतन में मनुष्य की कुछ आदिम वासनायें वर्तमान रहती हैं, जिन्हें फ्रायड यौन-वासनाओ, एडलर हीनता की भावनाओं और युंग जीवन की इच्छाओं के रूप में विश्लेषित करते हैं।

प्रेमचंद ने सामान्य मनोविज्ञान के आधार पर सामाजिक यथार्थ के उपन्यास लिखे। उसके बाद के युग में सामान्य मनोविज्ञान के साथ-साथ विशेष मनोवैज्ञानिक परिस्थतियों और पात्रों से सम्बद्ध उपन्यास लिखे गये, जिनमें सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति करने के स्थान पर अचेतन मन के रहस्यों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया। मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में उपन्यासकारों का मुख्य प्रतिपाद्य मनोवैज्ञानिक कथावस्तु, पात्र एवं क्षण होते हैं। इस श्रेणी के उपन्यासो में जैनेन्द्र के 'त्यागपत्र', 'कल्याणी', 'सुखदा', 'विवर्त', 'व्यतीत' आदि। इलाचन्द्र जोशी के 'संन्यासी', 'पर्दे की रानी',

'प्रेत की छाया', 'निर्वासित', 'युक्तिपथ', 'सुबह के भूले', 'जहाज के पंक्षी' आदि। अज्ञेय के उपन्यास 'शेखर : एक जीवनी', 'नदी के द्वीप', डॉ० देवराज के उपन्यास 'पथ की खोज', 'बाहर- भीतर', 'रोड़े और पत्थर', राजेन्द्र यादव कृत 'कुलटा, धर्मवीर भारती कृत 'गुनाहो का देवता', नरेश मेहता कृत 'डूबते मस्तूल', 'दो एकान्त', तथा मन्नू भण्डारी कृत 'आपका बंटी', 'स्वामी' एवं 'महाभोज' तथा उनकी कहानियों 'कील और कसक', 'तीसरा आदमी', 'घुटन' आदि में मनोविज्ञान का भरपूर प्रयोग हुआ है।

इस प्रकार साहित्य और मनोविज्ञान का अटूट संबंध है, क्योंकि दोनों के केन्द्र में मनुष्य ही होता है। हिन्दी कथाकारों ने जो भी मनोवैज्ञानिक कहानियाँ एवं उपन्यास लिखे, वह मनोविश्लेषण के सिद्धान्तों पर आधारित है। कई बार कथाकारों ने जीवन की यथार्थ घटनाओं को भी कथा के माध्यम से चित्रित किया है। पूर्व-प्रेमचंद युग में जहाँ समाज सुधार एवं मनोरंजन को केन्द्र में रखकर कहानियों एवं उपन्यासों की रचना की जाती थी, वहीं प्रेमचंद युग में कथा-साहित्य यथार्थ की ओर अग्रसर हुआ और कुछ-कुछ मन के विश्लेषण को आधार बनाया जाने लगा। इस युग में अधिकतर इतिहास, समाज एवं अंचल को केन्द्र में रखकर कथा-साहित्य की रचना हुई। प्रेमचंद एवं इसी युग में अपने लेखन का आरम्भ करने वाले जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी आदि की कहानियों में मनोविश्लेषण देखने को मिलता है। प्रेमचंदोत्तर युग में तो मनोवैज्ञानिक कथा-साहित्य की धारा ही चल पड़ी- जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी, अज्ञेय, डॉ. देवराज, राजेन्द्र यादव, मन्नू भण्डारी आदि कथाकारों ने मुक्त हृदय से मनोविज्ञान को आधार बनाकर कथा साहित्य की रचना की।

चतुर्थ अध्याय 'मन्नू भण्डारी की कहानियों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन'

चतुर्थ अध्याय 'मन्नू भण्डारी की कहानियों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन' के अन्तर्गत स्त्री मनोविज्ञान, बाल मनोविज्ञान, पुरुष मनोविज्ञान तथा समस्याओं का अवलोकन एवं निदान पक्ष का अध्ययन एवं अनुशीलन किया गया है। वस्तुत: मन्नू भण्डारी जी ने पारिवारिक सम्बन्धों के विघटन स्त्री-पुरुषों के सम्बन्धों के विखंडन और समाज के विभिन्न वर्गों के बीच खाई का कारण मनोविज्ञान को माना है। उनकी अधिकांश कहानियाँ एवं उपन्यास संयुक्त परिवार एवं एकल परिवार पर केन्द्रित हैं। परिवार का सम्बन्ध मनोविज्ञान से भी जुड़ा है। मनोविज्ञान से तात्पर्य मानव-व्यवहार से है। मानव के सद्व्यवहार एवं दुर्व्यवहार से ही उसके पारिवारिक जीवन में समस्यायें उत्पन्न होती है। परिवार से समाज बनता है, समाज से देश बनता है, ऐसे विघटित परिवार स्वस्थ जीवन-मूल्यों की रक्षा करने में असमर्थ रहते हैं। मन्नू भण्डारी ने इस विघटन

के अनेक मनोवैज्ञानिक कारणों पर अपनी पैनी दृष्टि डाली है, उन्होंने अपनी आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' में पुरुषों की पितृसत्तात्मक सोच कैसे एक आत्मनिर्भर लेखिका एवं शिक्षिका को त्रस्त करती है। इसे अपने पति कथाकार राजेंद्र यादव के दोहरे अस्तित्व की दास्तान के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

मन्नू जी की कहानियों में नारी मनोविज्ञान की भलीभांति परख हुई है। उनकी 'अकेली' कहानी की सोमा बुआ, 'नशा' कहानी की आनन्दी, 'रानी माँ का चबूतरा' कहानी की गुलाबो अथवा 'स्त्री सुबोधिनी' कहानी की स्टेनोग्राफार हो। सभी किसी न किसी प्रकार से मानसिक पीड़ा को झेल रही हैं। 'अकेली' की सोमा बुआ अपने जवान पुत्र की मृत्यु के कारण दुःखी है। 'नशा' की आनन्दी शराबी पिता के अत्याचार के कारण पीड़ित है। 'रानी माँ का चबूतरा' की गुलाबो गाँव वालों के व्यवहार से पीड़ित है, वे इसे चुड़ैल कहते हैं। मन्नू जी ने इन स्त्रियों की पीड़ा एवं मनोविज्ञान को यथार्थ रूप में उद्घाटित किया है। मन्नू जी की कहानियों में बाल मनोविज्ञान को गहराई से परखा और उद्घाटित किया गया है। मन्नू जी का 'आपका बंटी' उपन्यास पूर्णतया बाल मनोविज्ञान को केन्द्रित करके लिखा गया है, वहीं उनकी कहानियों में कुछ बाल पात्रों के भय, हीन ग्रंथि आदि को प्रस्तुत किया गया है। वस्तुतः मन्नू जी ने यह स्पष्ट रूप से उद्घाटित किया है कि माता-पिता के सामंजस्यपूर्ण जीवन का सबसे अधिक प्रभाव बच्चों पर ही पड़ता है।

मन्नू भण्डारी जी की कहानियों में पुरुष मनोविज्ञान को भी उत्कृष्ट रूप से उद्घाटित किया गया है। पुरुष संत्रास, उसकी पीड़ा, उसकी कुण्ठा, उसके मानसिक आघात, उसके अहंभाष, उसकी हीनता ग्रंथि, उसके भय आदि को मन्नू जी ने अपनी कहानियों में प्रकट किया है। उनके पात्र सतीश हो, दिनेश जी हो, ताऊ जी हो, मिस्टर वर्मा हों, दयाल बाबू हों अथवा रवि हो किसी न किसी मानसिक ग्रंथि के शिकार हैं, जो अपनी मानसिकता के कारण ही स्वयं को पीड़ित महसूस करते हैं। वास्तव में मन्नू जी ने जिन समस्याओं को उठाया है, उसका निदान भी उन्होंने नारी की चेतना को ही माना है। नारी शिक्षित, आत्मनिर्भर और सक्षम होगी तभी पुरुष की दृष्टि में उसके प्रति सम्मान आ पायेगा। वर्तमान में नैतिक मूल्यों का क्षरण, अति-आधुनिकता की ओर बढ़ते चरण तथा उपभोक्तावादी सोच ने विवेक बुद्धि का हरण कर लिया है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष तथा स्वार्थपरता ने हमारे हृदय में निहित प्रेम, दया, करुणा परोपकार, सहानुभूति, ममता एवं त्याग का गला घोंट दिया है, जिसके फलस्वरूप तमाम क्षेत्रों में प्रगति करने पर भी अनेक सामाजिक एवं पारिवारिक समस्याओं से छुटकारा पाने में हम असमर्थ हैं। मनोरोगी समाज के निर्माण की ओर बढ़ रहे हमारे कदमों पर नियंत्रण तभी संभव है, जब हम इस मुद्दे पर गंभीर होकर चिन्तन-मनन करें। मन्नू जी की कहानियों में इन समस्याओं का भलीभाँति

परीक्षण हुआ है। इन समस्याओं का निदान भी वहीं है, जहाँ से ये जन्म लेती हैं। अतः समाज से पुरुषवादी वर्चस्व समाप्त हो और समरसता आये।

इस प्रकार मन्नू जी की कहानियों में समस्याओं का आधार मनोवैज्ञानिक है। मनोविज्ञान मानव व्यवहार का विज्ञान होने के कारण व्यक्ति की क्रियाओं, व्यवहारों, आदतों तथा जीवन-मूल्यों से भी सम्बद्ध है। कुछ मूल प्रवृत्तियाँ भी समस्याएँ उत्पन्न करने में सहायक होती हैं। भय, प्रतिस्पर्धा, मातृत्व तथा सेक्स जैसी मूल प्रवृत्तियाँ भी समस्याओं का कारण बन सकती हैं। मन्नू जी की कहानियों में संत्रास, पीड़ा, कुण्ठा, मानसिक आघात, स्त्री-पुरुष का अहं हीनता ग्रंथि, अंतर्द्वंद, विध्वंसन, व्यक्तित्व, पीढ़ियों का अंतर, वय सुलभ आकांक्षा, परिवेशजन्य विकृति, विशेष मनोवृति जिजीविषा, तनाव, प्रतिरोध, अपराधबोध तथा अकेलेपन का एहसास आदि मनोवैज्ञानिक कारण समस्याओं का आधार बनकर आये हैं। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मन्नू जी की कहानियों से यह निष्कर्ष निकलकर आता है कि सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक तथा पारिवारिक परिस्थितियाँ व्यक्ति के अनुकूल नहीं होती।

उसके अचेतन मन में स्थित इच्छाएं दमित होती है तो ऐसी परिस्थति में व्यक्ति कुण्ठित होकर अपराध की ओर अग्रसर होता है। बाल अपराध एवं बाल अपराधियों की बढ़ती संख्या स्त्री उत्पीड़न के बढ़ते मामले आत्महत्या एवं हत्या में बढ़ोत्तरी इसके प्रमाण है।

पंचम अध्याय 'मन्नू भण्डारी के उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन'

'मन्नू भण्डारी के उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन' के अन्तर्गत स्त्री मनोविज्ञान, पुरुष मनोविज्ञान, बाल मनोविज्ञान तथा समस्याओं का अवलोकन एवं निदान पक्ष का अध्ययन और अनुशीलन किया गया है। वस्तुतः मन्नू भण्डारी जी के उपन्यासों का जब हम मनोविश्लेषण के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करते हैं तो उसमें मनोविश्लेषण की अन्तःधारा बहती हुई सी प्रतीत होती है। संयुक्त परिवार में दूसरे के सम्बन्धों को निभाते हुए नारी का जीना दूभर हो जाता है, वह स्वतन्त्र परिवार की कल्पना करती है। परिणामस्वरूप पारिवारिक विघटन की स्थिति उत्पन्न हो आती हैं। मन्नू जी ने अपने 'स्वामी' उपन्यास में संयुक्त परिवार में सम्बन्धों के बीच तनाव को भी प्रस्तुत किया है। संयुक्त परिवार में कई बार अनचाही बातें होती हैं, जिसे घर के सदस्यों को झेलना पड़ता है। सौदामिनी के ससुराल में यह बातें दिन-प्रतिदिन होती थीं, सास की व्यंग्यरूपी बातें एवं हर दिन एक नया बखेड़ा, उपहास करना, ताने कसना आदि से वह तंग आ गयी है। दूसरी ओर अपने

पति की अत्याधिक बर्दाश्त करने की आदत भी उसे सहन नहीं होती। सम्बन्धों की इस विकरालता को लेखिका ने मनोवैज्ञानिक धरातल पर प्रत्यक्ष किया है।

मन्नू जी के उपन्यासों में व्यक्ति के मन को गहराई के साथ परखा गया है। नारी मन की पीड़ा, कुण्ठा, भय, प्रेम आदि मनोवृत्तियों का यहाँ सफल निरुपण लेखिका ने किया है। मन्नू जी ने स्वप्न शैली के द्वारा पारिवारिक विसंगतियों के बीच पल रहे बालक के अन्तर्मन तक जाने का प्रयास किया है। यही नहीं बंटी हीनता ग्रंथि का भी शिकार है। यह हीनता की ग्रंथि उसके मन में जोशी के घर में निर्मित होती है। बंटी, जोशी जी के घर को स्वीकार नहीं करता है, फलस्वरूप काल्पनिक संसार की रचना करता है, शकुन की भाँति ही अमला के भी दुविधाग्रस्त चरित्र को विकसित होता दिखाया गया है। अमला तमाम सुख-सुविधाओं के बीच भी स्वयं को अकेला ही महसूस करती है। वह स्वतन्त्रता की चाह रखने वाली नारी है तथा हमेशा मुस्कुराती रहती है। उपन्यास के माध्यम से यौन भावना, बलात समायोजन, विवाह पूर्व एवं विवाहेत्तर युक्त यौन सम्बन्ध, दाम्पत्य विघटन तथा स्त्री-पुरुष सम्बन्धों में नवीनता की तर्क पर आधारित व्याख्या भी मनोविश्लेषणात्मक स्तर पर ही उठाई गयी है।

मन्नू जी के उपन्यासों में भी नारी मनोविज्ञान का यथार्थ रूप चित्रित हुआ है। 'स्वामी' उपन्यास की सौदामिनी हो, 'एक इंच मुस्कान' की अमला और रंजना हो अथवा 'आपका बंटी' उपन्यास की शकुन हो, सभी अहं, प्रतिस्पर्धा, अंतर्द्वंद्व, प्रतिशोध आदि की विकृत मनोग्रंथि से पीड़ित है। यही कारण है कि उनका दाम्पत्य जीवन घुटन भरा है अथवा टूट जाता है। लेखिका ने अपनी स्त्री पात्रों का चित्रण पूर्णतया मनोविश्लेषणात्मक ढंग से किया है। मन्नू जी ने 'आपका बंटी' उपन्यास में बंटी के माध्यम से बाल-मन का सूक्ष्म परीक्षण प्रस्तुत किया है। शकुन का बंटी को अलग सुला देना तथा पापा की कमी पूरा करने के लिए डॉ. जोशी से विवाह करना। बंटी के विकास के लिए पिता का संरक्षण एवं बच्चों की कम्पनी ढूँढना, बंटी जैसे बच्चे के मन को किस प्रकार प्रभावित करता है, लेखिका ने इसका चित्रण किया है। ये समस्त स्थितियां बंटी को अंतर्द्वंद्व ग्रस्त बना देती हैं। शकुन का उससे घृणा करना, उसे लेकर आहत महसूस करना, अजय का बंटी को कालकत्ता ले जाने के प्रस्ताव से पराजित महसूस करना, बंटी को अन्तर्मुखी बना देती हैं। बंटी भय, अंतर्द्वंद्व तथा अवसाद का शिकार हो जाता है, उसके स्वभाव में परिवर्तन आने लगता है, वह जिद्दी और आक्रामक हो उठता है। इस प्रकार मन्नू जी ने बंटी के माध्यम से समाज को यह संदेश भी देती हैं कि माता-पिता के अलग होने पर कितना बुरा प्रभाव बच्चे पर पड़ता है।

मन्नू जी ने अपने उपन्यासों में पुरुष चरित्रों का भी मनोवैज्ञानिक परीक्षण भलीभाँति किया है। उनके पात्र घनश्याम हों, अजय हों, डॉ. जोशी हों, अमर हों अथवा दा-साहब हों अकेलेपन, हीनता, संत्रास आदि से ग्रस्त हैं। 'एक इंच मुस्कान' में अमर हीन भावना एवं अनेक कुण्ठाओं से ग्रस्त है, वहीं बंटी भय, दुःख, पीड़ा आदि का शिकार हो गया है। अजय पराजयबोध एवं प्रतिशोध की भावना से घिरा हुआ है। इस प्रकार मन्नू जी ने उपन्यासों में पुरुष मानसिकता का यथार्थ उद्घाटन किया है। उन्होंने अपने उपन्यासों में अनेक समस्याओं को उद्घाटित किया है और साथ ही उसका निदान भी प्रस्तुत किया है। समस्यायें चाहे नारी से सम्बन्धित हो, बालक से संबंधित हो अथवा पुरुष से सम्बन्धित हो, मन्नू जी ने अंतःमन में बैठकर उसका अवलोकन किया है, तत्पश्चात् उसे अपने उपन्यासों में उद्घाटित किया है। इस प्रकार मन्नू जी ने अपने उपन्यासों में पात्रो को मनोवैज्ञानिक तौर पर परखा है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि हिन्दी कथा-साहित्य में मनोविज्ञान का उपयोग आरम्भ से ही होता रहा है किन्तु प्रेमचंदोन्तर युग में इसे विशेष रूप से महत्त्व प्राप्त हुआ। मन्नू जी ने अपने कथा-साहित्य में व्यक्ति-मन में उत्पन्न मानसिक तनावों को बखूबी चित्रित किया है। नारी-पुरुष के अहं के कारण पारिवारिक विघटन हो रहा है, इस कारण व्यक्ति हीन भावना एवं कुण्ठा का भी शिकार हो रहा है। इसका सर्वोत्कृष्ट उदाहरण उपन्यास 'आपका बंटी' में देखा जा सकता है। पारिवारिक विघटन के कारण एक बच्चे की बदलती मानसिक स्थिति को भी हम इस उपन्यास में देख सकते हैं। 'एक इंच मुस्कान' में अकेलेपन की समस्या को दर्शाया गया है। इतना ही नहीं पति के जीवन में अत्याधिक व्यस्तता, पति द्वारा उपेक्षित, आत्मनिर्भर नारी, स्वतंत्रता चाहने वाली विडम्बना को भी लेखिका ने अपने कथा-साहित्य में क्रमश: 'ऊंचाई', 'कील और कसक', 'बाहों का घेरा', 'तीसरा आदमी' आदि कहानी तथा 'स्वामी' आदि उपन्यासों में प्रत्यक्ष किया गया है।

<u>उपसंहारः-</u>

आधुनिक युग में पहिए और पंखे वाली बे-सिर पैर की सभ्यता में व्यक्ति की संवेदनाएं सूख सी गई है। आज शुष्क बौद्धिकता की जमीन पर सुखमय जीवन का बीज बोया जा रहा है। अतः फल प्राप्ति की आकांक्षा करना मृगतृष्णा ही साबित होगी। इन सारी परिस्थितियों का गहरा पैठ मन्नू भंडारी की कथा साहित्य में अवस्थित है। जैसे- 'सत्रह वर्ष में किया हुआ प्यार भी कोई प्यार होता है भला! निरा बचपना होता है, महज पागलपन। उसमें आवेश रहता है पर स्थायित्व

नहीं, गति रहती है, पर गहराई नही। जिस वेग से वह आरंभ होता है जरा सा झटका लगने पर उसी वेग से टूट भी जाता है।' जैसी मनः स्थितियों का क्रमागत पुनरावलोकन करना इस शोध प्रबंध का यथेष्ट है। बाल मनोविज्ञान या यूं कहूं कि मन्नू भंडारी के समस्त पात्रों का मनोवैज्ञानिक ढंग पर उनकी मन की संवेदनाओं, आकांक्षाओं एवं आत्मिक अनुभूति का समग्रतः अध्ययन एवं पुनरावलोकन इस शोध के माध्यम से किया गया है।

--:ग्रन्थानुक्रमाणिका:--

आधार ग्रन्थ-सूची:--

1. भण्डारी, मन्नू- नायक, खलनायक, विदूषक, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण- 2001

2. भण्डारी, मन्नू- एक इंच मुस्कान, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, संस्करण- 2013

3. भण्डारी, मन्नू- आपका बंटी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण- 1971

4. भण्डारी, मन्नू- महाभोज, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण- 2006

5. भण्डारी, मन्नू- स्वामी, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नयी दिल्ली, संस्करण- 2003

6. भण्डारी, मन्नू- एक कहानी यह भी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण- 2007

7. भण्डारी, मन्नू- तीन निगाहों की एक तस्वीर, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण- 2001

8. भण्डारी, मन्नू- एक प्लेट सैलाब, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण- 2001

9. भण्डारी, मन्नू- त्रिशंकु, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण- 2002

10. भण्डारी, मन्नू- मैं हार गयी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण- 2018

11. भण्डारी, मन्नू- मेरी प्रिय कहानियाँ, राजपाल एंड सन्स नयी दिल्ली, संस्करण- 2004

सहायक ग्रंथ सूची:-

1. जैन, अरविन्द- औरत: व्यक्तित्व और अस्मिता, सारांश प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण- 2000

2. राजूरकर, अनिता- कथाकार मन्नू भण्डारी, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नयी दिल्ली, संस्करण- 1987

3. व्होरा, आशारानी- नारी विद्रोह के भारतीय मंच, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली, संस्करण- 1991

4. श्रीवास्तव, डी. एन- सामान्य मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, संस्करण- २०२०

5. सिरसाट, सोनिया- राजेन्द्र यादव के कथा- साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन, विद्या प्रकाशन, कानपुर, संस्करण- 2011

6. बजाज, गुरुदयाल- सामान्य मनोविज्ञान और हिन्दी एकांकी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण- 2016

7. जायसवाल, सीताराम- मनोविज्ञान की ऐतिहासिक रूपरेखा विहार ग्रन्थ अकादमी, पटना, संस्करण- 1998

8. उपाध्याय, बलदेव भारतीय साहित्यशास्त्र, प्रसाद परिषद वाराणसी, संस्करण- 1948

9. प्रेमचंद- कुछविचार, डायमंड पॉकेट बुक्स, दिल्ली, संस्करण- 2011

10. डॉ० नगेन्द्र-विचार और अनुभूति, गौतम बुक डिपो, दिल्ली संस्करण- 1991

11. मिश्र, रामदर्श- हिन्दी कहानी: अंतरंग परिचय, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण- 2011

12. अंचल, अयोध्या प्रसाद- बाल मनोविज्ञान की रूपरेखा, हरीश प्रकाशन, आगरा, संस्करण- 1982

13. रोहतगी, डॉ० मिथिलेश- हिन्दी की नयी कहानी का मनोवैज्ञानिक अध्ययन, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, संस्करण- 1990

14. डॉ० नीरजा- मन्नू भण्डारी के उपन्यास साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, संस्करण- 2002

15. प्रेम कुमार- स्वतन्त्रता परवर्ती हिन्दी उपन्यास, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, संस्करण– 1979

16. डॉ० वंशीधर एवं मिश्र, डॉ० राजेन्द्र- संपा०- मन्नू भण्डारी का श्रेष्ठ सर्जनात्मक साहित्य, नटराज पब्लशिंग हाऊस, करनाल, हरियाणा, संस्करण- 1983

17. माथुर, डॉ० उमेश- आधुनिक युग की हिन्दी लेखिकाएँ

18- शर्मा, डॉ० बृज मोहन- कथा लेखिका मन्नू भण्डारी, कादम्बरी प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली, संस्करण- 2009

19. ईप्पन, डॉ० बीना- मन्नू भण्डारी का रचना संसार, विजयंत प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण- 1996

20. वाजपेयी, माधुरी - उपन्यासकार मन्नू भण्डारीः एक अध्ययन, अटल प्रकाशन, कानपुर, संस्करण- १९९८

21. यादव, राजेन्द्र- प्रेमचंद की विरासत और अन्य निबन्ध अक्षर प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण- 1978

22. राठोड, डॉ० भीमसिंग के मन्नू भण्डारीः व्यक्तित्व और कृतित्व वाङमय बुक्स, अलीगढ़, संस्करण- 2014

23. तिवारी, डॉ० रामचन्द्र- हिन्दी उपन्यास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण- 2010

24. त्रिपाठी, डॉ० शशिकला- उत्तरशती के उपन्यासों में स्त्री, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण- 2014

25. मानधाने, धनराज- हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास, सं साथी प्रेस, कानपुर, संस्करण- 1971

26. कर्पूर, डॉ० अनिता एस.- मन्नू भण्डारी के कथा - साहित्य में मनोवैज्ञानिकता, विद्या प्रकाशन, कानपुर, संस्करण- 2016

27. गुप्ता, डा० बीनारानी महिला साहित्यकारों का नवचिंतन, उत्कर्ष पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर, संस्करण- 2015

28. डॉ० बेचन-आधुनिक हिन्दी उपन्यास: उद्भव और विकास सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण- 1971

29. नाग, कृष्णा- किशोरीलाल गोस्वामी के उपन्यासों का वस्तुगत और रूपगत विवेचन, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल; आगरा, संस्करण- 1966

30. जैन, ज्ञानचंद- प्रेमचंद-पूर्व के हिन्दी उपन्यास, आर्य प्रकाशन मंडल, दिल्ली, संस्करण- 1988

31. गुलाटी, डॉ० यश-वृहत् साहित्यिक निबन्ध, सूर्यभारती प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण- 2007

32. सिन्हा, डॉ० सुरेश- हिन्दी उपन्यासः उद्भव और विकास अशोक प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण- 1965

33. सिंह, डॉ० बच्चन- हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण- 2017

34. जैनेन्द्र-कहानीः अनुभव और शिल्प, पूर्वोदय प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण- 1967

35. शुक्ल, उमा- भारतीय नारी अस्मिता की पहचान, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण- 1994

36. भटनागर, उर्मिला- हिन्दी उपन्यास साहित्य में दांपत्य चित्रण, अर्चना प्रकाशन, जयपुर, संस्करण- 1991

37. देशमुख, रमेश- आठवें दशक की हिन्दी कहानी में जीव मूल्य, विद्या प्रकाशन, कानपुर, संस्करण- 2000

38. राणावतः उषाकीर्ति- स्त्री-पुरुषों के सम्बन्धों का विमर्श साहित्य चन्द्रिका प्रकाशन, जयपुर, संस्करण- 2006

39. यादव, उषा-हिन्दी महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण- 1995

40. वेकटेश्वर, डॉ० एम० - हिन्दी के समकालीन महिला उपन्यासकार, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, संस्करण- 2002

41. गणेशदास- स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी के विविध रूप, अक्षर प्रकाशन, कानपुर, संस्करण- 1992

42. सोलंकी, गीता– नारी चेतना और कृष्णा सोबती के उपन्यास भारत पुस्तक भण्डार, दिल्ली, संस्करण- 2004

43. भूतड़ा, धनश्यामदास- समकालीन हिन्दी कहानियों में नारी के विविध रूप, अतुल प्रकाशन, कानपुर, संस्करण- 1993

44. मिश्र, नन्दनी- मन्नू भण्डारी का उपन्यास साहित्य, हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ, संस्करण- 1984

45. सिंह, पुष्पमाल-नौकरी पेशा नारी: कहानी के आईने में, सामयिक प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण- 2002

46. सिंह, पुष्पपाल- समकालीन कहानीः युगबोध का संदर्भ, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नयी दिल्ली, संस्करण- 1986

47. प्रकाश, मन्नू बीसवीं शताब्दी के अंत में हिन्दी उपन्यास, नमन प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण- 2003

48. यादव, राजेन्द्र- स्वतंत्रोत्तर उपन्यासों का मूल्यांकन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण- 1981

49. कस्तवार, रेखा- स्त्री चिन्तन की चुनौतियाँ, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण- 2006

50. अग्रवाल, रोहिणी- हिन्दी उपन्यास में कामकाजी महिला, दिनमान प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण- 2001

51. वारद, विजया- साठोत्तरी हिन्दी कहानी और महिला लेखिकाएँ, विकास प्रकाशन, कानपुर, संस्करण- 1993

पत्र एवं पत्रिकाएँ:-

(1)- आजकल दिल्ली।

(2)- आलोचना-दिल्ली।

(3)- समीक्षा-दिल्ली।

(4)- हंस दिल्ली।

(5)- दस्तावेज-गोरखपुर।

(7)- नया मानदण्ड-वाराणसी।

इन्टरनेट माध्यम:-

1. Google search
2. Wikipedia
3. www.Hinkhoj.com
4. www.Shodhganga.in
5. Yahoo search
6. www.flibnet.ac.in